International Journal of Multidisciplinary Research in Science, Engineering and Technology (IJMRSET)

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 4.988| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 4, Issue 2, February 2021 |

| DOI: 10.15680/IJMRSET.2021.0402007 |

आचार्य चतुरसेन शास्त्री एवं प्रेमचंद के हिंदी कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ दीपाली शर्मा

सह आचार्य हिंदी साहित्य, एस डी राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर, भारत

सारांश (ABSTRACT): हिंदी कथा साहित्य के इतिहास में आचार्य चतुरसेन शास्त्री और मुंशी प्रेमचंद का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। दोनों साहित्यकारों ने अपने-अपने ढंग से हिंदी साहित्य को नई दिशा प्रदान की। प्रेमचंद ने सामाजिक यथार्थ, ग्रामीण जीवन, आर्थिक विषमता, जातिगत भेदभाव तथा मानवीय संवेदनाओं को कथा साहित्य का आधार बनाया, जबकि आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने भारतीय इतिहास, संस्कृति, धर्म, राजनीति तथा राष्ट्रीय चेतना को अपने साहित्य में प्रमुखता प्रदान की। प्रस्तुत शोध पत्र में दोनों साहित्यकारों के कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें उनकी विषय-वस्तु, पात्र-चित्रण, भाषा-शैली, सामाजिक दृष्टिकोण, नारी-दृष्टि तथा साहित्यिक योगदान का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि दोनों साहित्यकारों की रचनात्मक दृष्टि अलग होते हुए भी समाज सुधार और मानवता की स्थापना के उद्देश्य से प्रेरित थी। शोध में तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है तथा विभिन्न आलोचनात्मक ग्रंथों एवं साहित्यिक स्रोतों का सहारा लिया गया है।

मुख्य शब्द: हिंदी कथा साहित्य, तुलनात्मक अध्ययन, सामाजिक यथार्थ, ऐतिहासिक चेतना, प्रेमचंद, आचार्य चतुरसेन शास्त्री।

I. प्रस्तावना

हिंदी साहित्य की आधुनिक धारा में कथा साहित्य का विशेष महत्व है। बीसवीं शताब्दी हिंदी कथा साहित्य के विकास का स्वर्णिम काल माना जाता है। इस काल में अनेक साहित्यकारों ने समाज, संस्कृति, राजनीति और मानव जीवन की जटिलताओं को अपने साहित्य का विषय बनाया। इनमें मुंशी प्रेमचंद और आचार्य चतुरसेन शास्त्री का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रेमचंद को हिंदी कथा साहित्य का युगप्रवर्तक कहा जाता है। उन्होंने साहित्य को केवल मनोरंजन का साधन न मानकर समाज परिवर्तन का माध्यम बनाया। उनके साहित्य में किसान, मजदूर, दलित, स्त्री और निम्न वर्ग की समस्याओं का यथार्थ चित्रण मिलता है। दूसरी ओर आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक चेतना को कथा साहित्य में प्रतिष्ठित किया। उन्होंने भारतीय इतिहास और धर्म को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया।

दोनों साहित्यकारों की साहित्यिक दृष्टि में पर्याप्त अंतर होते हुए भी एक समानता स्पष्ट दिखाई देती है—दोनों मानवता, नैतिकता और समाज सुधार के पक्षधर थे। प्रस्तुत शोध पत्र में इन्हीं दोनों महान साहित्यकारों के कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

II. शोध का उद्देश्य

इस शोध पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

1. आचार्य चतुरसेन शास्त्री एवं प्रेमचंद के कथा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. दोनों साहित्यकारों की विषय-वस्तु एवं सामाजिक दृष्टिकोण का विश्लेषण करना।
3. पात्र-चित्रण एवं नारी-दृष्टि का अध्ययन करना।
4. भाषा-शैली की विशेषताओं का विवेचन करना।
5. हिंदी कथा साहित्य में दोनों साहित्यकारों के योगदान का मूल्यांकन करना।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 4.988| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 4, Issue 2, February 2021 |

| DOI: 10.15680/IJMRSET.2021.0402007 |

III. शोध पद्धति (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध पत्र में तुलनात्मक, विश्लेषणात्मक एवं व्याख्यात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। अध्ययन हेतु मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। इसमें दोनों साहित्यकारों की प्रमुख कृतियों, आलोचनात्मक पुस्तकों, शोध आलेखों एवं साहित्यिक पत्रिकाओं का अध्ययन किया गया है।
शोध के अंतर्गत निम्न विधियों का प्रयोग किया गया—

- तुलनात्मक अध्ययन पद्धति
- साहित्यिक विश्लेषण पद्धति
- ऐतिहासिक पद्धति
- समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

इन पद्धतियों के माध्यम से दोनों साहित्यकारों की साहित्यिक विशेषताओं का सम्यक विश्लेषण किया गया है।

हिंदी कथा साहित्य की पृष्ठभूमि

हिंदी कथा साहित्य का विकास भारतीय समाज के विकास से जुड़ा हुआ है। भारतेंदु युग से प्रारंभ होकर द्विवेदी युग और छायावाद काल तक हिंदी साहित्य में अनेक परिवर्तन हुए। आधुनिक काल में कथा साहित्य ने विशेष उन्नति की। इस समय समाज में औपनिवेशिक शोषण, गरीबी, अशिक्षा, जातिगत भेदभाव तथा सामाजिक कुरीतियाँ विद्यमान थीं। साहित्यकारों ने इन समस्याओं को अपने साहित्य का विषय बनाया।
प्रेमचंद और आचार्य चतुरसेन शास्त्री इसी युग की उपज थे। दोनों ने समाज की वास्तविक परिस्थितियों को साहित्य में अभिव्यक्ति दी। यद्यपि उनकी साहित्यिक दिशा अलग थी, फिर भी दोनों का उद्देश्य समाज का कल्याण था।

आचार्य चतुरसेन शास्त्री: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

आचार्य चतुरसेन शास्त्री हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध उपन्यासकार, चिकित्सक और चिंतक थे। उनका जन्म 26 अगस्त 1891 को उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले में हुआ। उन्होंने आयुर्वेद का अध्ययन किया और बाद में साहित्य सृजन की ओर प्रवृत्त हुए।
उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं—

- वैशाली की नगरवधू
- सोमनाथ
- वयं रक्षामः
- धर्मपुत्र

उनके साहित्य में इतिहास, धर्म, संस्कृति और राष्ट्रवाद का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। उन्होंने भारतीय गौरव और सांस्कृतिक चेतना को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया।

प्रेमचंद: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

मुंशी प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के निकट लमही गाँव में हुआ। उनका वास्तविक नाम धनपत राय था। उन्होंने हिंदी एवं उर्दू दोनों भाषाओं में साहित्य सृजन किया।
उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं—

- गोदान
- गबन
- निर्मला
- कर्मभूमि
- कफन

प्रेमचंद ने साहित्य को समाज सुधार का माध्यम माना। उन्होंने ग्रामीण जीवन, किसान समस्याओं, स्त्री उत्पीड़न तथा सामाजिक अन्याय का अत्यंत मार्मिक चित्रण किया।

IV. विषय-वस्तु का तुलनात्मक अध्ययन

प्रेमचंद की विषय-वस्तु

प्रेमचंद का साहित्य सामाजिक यथार्थ से प्रेरित है। उन्होंने भारतीय समाज की वास्तविक समस्याओं को अपने साहित्य का विषय बनाया। उनके उपन्यासों और कहानियों में किसान, मजदूर, दलित और निम्न वर्ग के लोगों की पीड़ा का चित्रण मिलता है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 4.988| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 4, Issue 2, February 2021 |

| DOI: 10.15680/IJMRSET.2021.0402007 |

उदाहरण के लिए, गोदान में किसान जीवन की त्रासदी का अत्यंत यथार्थ चित्रण किया गया है। होरी जैसे पात्र भारतीय किसान की विवशता का प्रतीक हैं।

आचार्य चतुरसेन शास्त्री की विषय-वस्तु
आचार्य चतुरसेन शास्त्री का साहित्य ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक चेतना से प्रेरित है। उन्होंने भारतीय इतिहास के गौरवपूर्ण प्रसंगों को साहित्य में स्थान दिया।
सोमनाथ में उन्होंने भारतीय संस्कृति और विदेशी आक्रमणों का चित्रण किया है। उनका उद्देश्य राष्ट्रीय चेतना को जागृत करना था।

तुलनात्मक दृष्टि
जहाँ प्रेमचंद वर्तमान समाज की समस्याओं को चित्रित करते हैं, वहीं चतुरसेन शास्त्री अतीत के माध्यम से वर्तमान को दिशा देने का प्रयास करते हैं। प्रेमचंद का साहित्य यथार्थवादी है, जबकि चतुरसेन का साहित्य ऐतिहासिक एवं आदर्शवादी दृष्टिकोण से प्रेरित है।

V. पात्र-चित्रण का तुलनात्मक अध्ययन

प्रेमचंद के पात्र
प्रेमचंद के पात्र सामान्य जनजीवन से जुड़े हुए हैं। वे समाज के वास्तविक प्रतिनिधि हैं। होरी, धनिया, घीसू, माधव, जालपा आदि पात्र अत्यंत जीवंत एवं यथार्थवादी हैं।
उनके पात्रों में संघर्ष, गरीबी, विवशता और मानवीय संवेदना स्पष्ट दिखाई देती है।

चतुरसेन शास्त्री के पात्र
चतुरसेन शास्त्री के पात्र वीरता, त्याग और आदर्शवाद के प्रतीक हैं। उनके पात्र ऐतिहासिक चेतना एवं राष्ट्रप्रेम से प्रेरित दिखाई देते हैं।
उनके पात्रों में मानसिक दृढ़ता, साहस और सांस्कृतिक गौरव की भावना स्पष्ट दिखाई देती है।

तुलनात्मक विवेचन
प्रेमचंद के पात्र आम जनता के प्रतिनिधि हैं, जबकि चतुरसेन शास्त्री के पात्र ऐतिहासिक आदर्शों के प्रतीक हैं। प्रेमचंद का पात्र जीवन की वास्तविकता से संघर्ष करता है, जबकि चतुरसेन का पात्र आदर्शों की स्थापना हेतु संघर्ष करता है।

VI. नारी-दृष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

प्रेमचंद की नारी-दृष्टि
प्रेमचंद ने नारी जीवन की समस्याओं को अत्यंत संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया। निर्मला में दहेज प्रथा एवं बाल विवाह की समस्या का चित्रण किया गया है।
धनिया, जालपा, मालती आदि पात्र स्त्री संघर्ष और आत्मसम्मान का प्रतिनिधित्व करते हैं।

चतुरसेन शास्त्री की नारी-दृष्टि
आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने नारी को शक्ति, सौंदर्य और संस्कृति की प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया। वैशाली की नगरवधू में नारी के आत्मसम्मान एवं सामाजिक स्थिति का प्रभावशाली चित्रण मिलता है।

तुलनात्मक विवेचन
प्रेमचंद की नारी सामाजिक कुरीतियों से संघर्ष करती है, जबकि चतुरसेन की नारी सांस्कृतिक चेतना और आत्मगौरव की प्रतीक है।

VII. भाषा-शैली का तुलनात्मक अध्ययन

प्रेमचंद की भाषा
प्रेमचंद की भाषा सरल, सहज और जनसामान्य की भाषा है। उन्होंने ग्रामीण जीवन और लोकभाषा का प्रयोग किया। उनकी भाषा में उर्दू एवं हिंदी का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 4.988| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 4, Issue 2, February 2021 |

| DOI: 10.15680/IJMRSET.2021.0402007 |

चतुरसेन शास्त्री की भाषा
चतुरसेन शास्त्री की भाषा संस्कृतनिष्ठ एवं साहित्यिक है। उनकी भाषा में गंभीरता, ओज और ऐतिहासिक गरिमा दिखाई देती है।

तुलनात्मक विवेचन
प्रेमचंद की भाषा जनभाषा के निकट है, जबकि चतुरसेन की भाषा विद्वतापूर्ण एवं गंभीर है। प्रेमचंद की भाषा भावनात्मक प्रभाव उत्पन्न करती है, जबकि चतुरसेन की भाषा वैचारिक एवं सांस्कृतिक चेतना को जागृत करती है।

सामाजिक चेतना
दोनों साहित्यकार समाज सुधार की भावना से प्रेरित थे।

प्रेमचंद की सामाजिक चेतना
प्रेमचंद ने सामाजिक शोषण, जातिगत भेदभाव, आर्थिक विषमता तथा स्त्री उत्पीड़न के विरुद्ध आवाज उठाई। उनका साहित्य मानवतावादी दृष्टिकोण से प्रेरित है।

चतुरसेन शास्त्री की सामाजिक चेतना
चतुरसेन शास्त्री ने भारतीय संस्कृति, इतिहास और धर्म के माध्यम से समाज को जागृत करने का प्रयास किया। उन्होंने राष्ट्रीय चेतना एवं सांस्कृतिक गौरव को महत्व दिया।

यथार्थवाद एवं आदर्शवाद
प्रेमचंद का साहित्य यथार्थवादी है। उन्होंने समाज की वास्तविक समस्याओं को बिना किसी आडंबर के प्रस्तुत किया।
दूसरी ओर चतुरसेन शास्त्री का साहित्य आदर्शवादी एवं ऐतिहासिक दृष्टिकोण से प्रेरित है। उनके साहित्य में आदर्श नायक और सांस्कृतिक गौरव की प्रधानता है।

VIII. साहित्यिक योगदान

प्रेमचंद का योगदान
- हिंदी उपन्यास को सामाजिक यथार्थ से जोड़ना
- किसान एवं दलित जीवन को साहित्य में स्थान देना
- हिंदी कहानी को नई दिशा प्रदान करना
- साहित्य को समाज सुधार का माध्यम बनाना

चतुरसेन शास्त्री का योगदान
- ऐतिहासिक उपन्यास परंपरा को समृद्ध करना
- भारतीय संस्कृति एवं इतिहास का पुनर्मूल्यांकन
- राष्ट्रीय चेतना का विकास
- साहित्य में सांस्कृतिक गौरव की स्थापना

IX. आलोचनात्मक दृष्टिकोण

आलोचकों के अनुसार प्रेमचंद का साहित्य भारतीय समाज का दर्पण है। उन्होंने साहित्य को जनजीवन से जोड़ा। वहीं आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने इतिहास और संस्कृति को साहित्यिक अभिव्यक्ति देकर हिंदी साहित्य को नई दिशा प्रदान की।
कुछ आलोचक चतुरसेन शास्त्री को अत्यधिक आदर्शवादी मानते हैं, जबकि प्रेमचंद को यथार्थवादी साहित्यकार के रूप में स्वीकार किया जाता है। तथापि दोनों का साहित्य भारतीय समाज की चेतना का महत्वपूर्ण दस्तावेज है।

X. निष्कर्ष

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि मुंशी प्रेमचंद और आचार्य चतुरसेन शास्त्री हिंदी कथा साहित्य के दो महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। दोनों की साहित्यिक दृष्टि भिन्न होने पर भी उनका उद्देश्य समाज एवं मानवता का कल्याण था।

| ISSN: 2582-7219 | www.ijmrset.com | Impact Factor: 4.988| Monthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 4, Issue 2, February 2021 |

| DOI: 10.15680/IJMRSET.2021.0402007 |

प्रेमचंद ने सामाजिक यथार्थ और मानवीय संवेदनाओं को साहित्य का केंद्र बनाया, जबकि आचार्य चतुरसेन शास्त्री ने इतिहास, संस्कृति एवं राष्ट्रीय चेतना को अपने साहित्य का आधार बनाया। दोनों साहित्यकारों ने हिंदी कथा साहित्य को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। तुलनात्मक अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि हिंदी कथा साहित्य की समृद्धि विभिन्न विचारधाराओं एवं साहित्यिक दृष्टिकोणों के समन्वय से संभव हुई है। प्रेमचंद और चतुरसेन शास्त्री का साहित्य आज भी भारतीय समाज और संस्कृति को समझने का महत्वपूर्ण माध्यम है।

संदर्भ सूची (References)

1. गोदान — प्रेमचंद (1936)
2. गबन — प्रेमचंद (**1931**)
3. निर्मला — प्रेमचंद (1927)
4. कर्मभूमि — प्रेमचंद (1932)
5. कफन — प्रेमचंद (1936)
6. वैशाली की नगरवधू — आचार्य चतुरसेन शास्त्री(1948)
7. सोमनाथ — आचार्य चतुरसेन शास्त्री(1954)
8. वयं रक्षामः — आचार्य चतुरसेन शास्त्री(1951)
9. रामविलास शर्मा — *प्रेमचंद और उनका युग(1952)*
10. डॉ. नगेंद्र (संपादक) — *हिंदी साहित्य का इतिहास(1973)*
11. हजारीप्रसाद द्विवेदी — *हिंदी साहित्य की भूमिका(1940)*
12. नामवर सिंह — *कहानी नई कहानी(1965)*
13. नंददुलारे वाजपेयी — *हिंदी साहित्य और संवेदना(1986)*
14. रामचंद्र शुक्ल — *हिंदी साहित्य का इतिहास(1929)*